PRGI No. RJBIL/26/A0880

# नवधृति मानवाधिकार समाचार

सच साहस न्याय की खबर

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 08 सम्पादक: श्रवण पंवार, जयपुर मो.: 9251120059 जयपुर, नवम्बर, 2026




NMS NEWS
सच. साहस. न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
DIGITAL & PRINT MEDIA

www.nms.news We are at- E-mail: info@nms.news

— सच • अधिकार • समाज —

# आवश्यकता

NMS NEWS
सच. साहस. न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
DIGITAL & PRINT MEDIA

## देश-प्रदेश में समाचार पत्रिका के विस्तार हेतु पत्रकार/संवाददाता एवं विज्ञापन एजेंट्स की आवश्यकता है।




**अगर आपको अपने क्षेत्र व देश की समस्याओं को**

- सामने लाने का जुनून है
- पत्रकार के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं
- समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहयोग करना चाहते हैं
- तो यह आपके लिये एक सुनहरा अवसर है।

**हमसे जुड़ें, बदलाव का हिस्सा बनें !**

### आपको मिलेगा

- समाज में सकात्मक बदलाव लाने का अवसर
- अपनी आवाज को मंच देने का अवसर
- पहचान बनाएं, सम्मान पाएं,
- करियर में नई ऊंचाइयों को छुएं

### संपर्क करें

जिला संवाददाता – तहसील/ब्लॉक रिपोर्टर, ब्यूरो चीफ

मुख्य कार्यालय : जयपुर, राजस्थान

9251120059

www.nms.news

“ मानवाधिकार की रक्षा – हमारा संकल्प, आपकी आवाज – हमारी ताकत ”

---

</> Code. Create. Innovate.

# महादेव पंवार




## सॉफ्टवेयर इंजीनियर व डेवलपर

Web Development | Frontend Development | Backend Development | Database Management

“ कोड सिर्फ एक काम नहीं, यह समस्या का समाधान और बेहतर भविष्य का निर्माण है। ”

@mahadevpanwar.dev

समर्पण | नवाचार | तकनीक | उत्कृष्टता

नवधृति

# मानवाधिकार समाचार

सच साहस न्याय की खबर

PRGI No. RJBIL/26/A0880

प्रकाशक— श्रवण पंवार, जयपुर

वर्ष : 01 अंक : 08 दिनांक : नवम्बर, 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
के सदस्य शुल्क का विवरण

NMS NEWS
सच. साहस. न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
DIGITAL & PRINT MEDIA

सदस्यता शुल्क (वार्षिक)
400/- रुपये पोस्टेज सहित

प्रकाशक एवं सम्पादक
**श्रवण पंवार**
जयपुर (राजस्थान)

जयपुर कार्यालय
पथ नं. 6, प्लॉट नं-39, नियर खेतान
हॉस्पीटल, विजयवाड़ी, सीकर रोड़,
जयपुर (राज.) 302039
मो.: 9251120059
www.nms.news
E-mail: info@nms.news

कम्प्यूटर डिजाईनिंग
जयते प्रिंटर्स मो.: 7790990770

नोट- समस्त विवाद जयपुर
न्यायालय के अंतर्गत रहेगा

## विषय सूची


| क्र. सं. | विवरण | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 01 | सम्पादकीय | 01 |
| 02 | शांति एवं विकास के लिए विज्ञान की आवश्यकता | 02 |
| 03 | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था: ज्ञान, संस्कार और रोजगार के बीच संतुलन की चुनौती | 04 |
| 04 | बचपन बचाना है, तो भविष्य बचाना होगा | 06 |
| 05 | पत्रकारिता: लोकतंत्र का प्रहरी या बाजार का खिलौना? | 08 |
| 06 | टेलीविजन: कल, आज और कल | 10 |
| 07 | दिव्यांगता नहीं, अवसरों की कमी है असली चुनौती | 12 |
| 08 | डॉ. आंबेडकर: समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के अमर प्रहरी | 14 |
| 09 | भ्रष्टाचार और नरसंहार— सभ्य समाज के सामने दो गंभीर चुनौतियाँ | 15 |
| 10 | दीपावली:अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का महापर्व | 17 |
| 11 | राजस्थान संक्षिप्त परिचय | 22 |


स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक व सम्पादक श्रवण कुमार पंवार के लिए प्रिन्टर्स (मुद्रक) विजेन्द्र प्रकाश हलचल, विजय पथ, धानी नगर, श्याम नगर, फुलेरा, जयपुर (राजस्थान) से मुद्रित एवं लखेरा शक्ति क्रियेशन प्रा.लि., सी-1 सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर (राज.) 302039 से प्रकाशित

# अंधकार से प्रकार की ओर, मानवता से समाज का उत्थान

**प्रिय पाठकों,**

नवंबर का महीना अपने साथ नई उम्मीदें, उत्साह, उमंग और खुशियों का संदेश लेकर आता है। यह महीना हमें सामाजिक एकता, आपसी भाईचारे, प्रेम, सद्भावना और मानवता के मूल्यों को मजबूत करने की प्रेरणा देता है। इसी माह दीपावली का पावन पर्व भी मनाया जाता है, जो केवल दीप जलाने का त्योहार नहीं, बल्कि जीवन से अंधकार, निराशा, बुराई और नकारात्मकता को दूर कर ज्ञान, सत्य, सदाचार और सकारात्मकता का प्रकाश फैलाने का प्रतीक है।

आज हमारा समाज अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है। कहीं सामाजिक भेदभाव है, कहीं आर्थिक असमानता, कहीं महिलाओं की सुरक्षा का प्रश्न है तो कहीं शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को लेकर संघर्ष जारी है। ऐसे समय में हम सभी का दायित्व है कि समाज के कमजोर, वंचित, जरूरतमंद और पीड़ित वर्गों की आवाज बनें। मानवाधिकार केवल अधिकारों की बात नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, सुरक्षा, समानता और न्याय के साथ जीवन जीने का अवसर प्रदान करने का संकल्प है।

**मानवाधिकार और सामाजिक जिम्मेदारी**

एक सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वहां महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों श्रमिकों, गरीबों और जरूरतमंद लोगों को कितना सम्मान और सुरक्षा मिलती है। हमें ऐसा वातावरण तैयार करना होगा, जहां किसी के साथ जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव न हो। शिक्षा के प्रति जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकारों की सुरक्षा और जरूरतमंद परिवारों की सहायता जैसे कार्य केवल संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का सामाजिक कर्तव्य हैं।

दीपावली भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण और पावन पर्व है। यह पर्व हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी आशा का दीप जलाए रखना चाहिए। जिस प्रकार एक छोटा-सा दीपक अंधकार को दूर कर सकता है, उसी प्रकार एक छोटा-सा नेक कार्य किसी जरूरतमंद के जीवन में खुशियों की रोशनी ला सकता है। इस दीपावली पर हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम केवल अपने घरों को ही नहीं, बल्कि जरूरतमंदों के जीवन को भी खुशियों से रोशन करें। गरीब परिवारों के साथ खुशियां बांटें, बच्चों को शिक्षा के लिए प्रेरित करें, बुजुर्गों का सम्मान करें और समाज में प्रेम एवं भाईचारे का संदेश फैलाएं।

आइए, इस दीपावली पर हम पर्यावरण के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी निभाएं। पटाखों के अत्यधिक उपयोग से बचें, ध्वनि एवं वायु प्रदूषण कम करें और स्वच्छ, सुरक्षित तथा पर्यावरण अनुकूल दीपावली मनाएं।

**नवंबर 2026 का हमारा संकल्प**

नवधृति मानवाधिकार समाचार का उद्देश्य केवल समाचार प्रकाशित करना नहीं, बल्कि समाज में जागरूकता, सकारात्मक सोच, जनहित के मुद्दों और मानवाधिकारों से जुड़े विषयों को प्रमुखता से सामने लाना भी है। हमारी कोशिश रहेगी कि समाज के अंतिम व्यक्ति की आवाज को मंच मिले और जनहित से जुड़े मुद्दों को जिम्मेदारी एवं निष्पक्षता के साथ पाठकों तक पहुंचाया जाए। हम अपने सभी पाठकों, संवाददाताओं, सहयोगियों और शुभचिंतकों से अपील करते हैं कि वे सामाजिक सद्भाव, सत्य, निष्पक्ष पत्रकारिता और मानवता के मूल्यों को मजबूत बनाने में अपना योगदान दें। अंत में, दीपावली के इस पावन अवसर पर यही कामना है कि हर घर में सुख-समृद्धि हो, हर चेहरे पर मुस्कान हो, हर परिवार में खुशहाली हो और किसी भी व्यक्ति को अभाव, अन्याय या भेदभाव का सामना न करना पड़े।

आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जहां इंसान की पहचान उसकी जाति या धर्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म, संस्कार और मानवता से हो।

**—संपादक**

(नवधृति मानवाधिकार समाचार)

# शांति एवं विकास के लिए विज्ञान की आवश्यकता

## विज्ञान: मानवता की प्रगति, विश्व शांति और उज्ज्वल भविष्य का आधार

विज्ञान मानव सभ्यता की प्रगति का वह सशक्त माध्यम है, जिसने मनुष्य के जीवन को नई दिशा प्रदान की है। जिस मानव ने कभी प्रकृति की शक्तियों के सामने स्वयं को असहाय अनुभव किया था, उसी ने विज्ञान के सहारे अनेक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की है। चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, संचार, परिवहन और उद्योग सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। आज विज्ञान केवल सुविधाओं का साधन नहीं, बल्कि शांति, सामाजिक समरसता और सतत विकास की स्थापना का एक महत्त्वपूर्ण आधार भी है। शांति एवं विकास के लिए विज्ञान की आवश्यकता को समझना वर्तमान समय की प्रमुख जरूरत है।

### विज्ञान और विश्व शांति का संबंध—

विश्व शांति का अर्थ केवल युद्धों का न होना नहीं है, बल्कि ऐसा वातावरण स्थापित करना भी है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा, सम्मान, न्याय और समान अवसर प्राप्त हों। विज्ञान इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आधुनिक संचार तकनीकों ने विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोगों को एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य किया है। इंटरनेट, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डिजिटल माध्यमों से विचारों का आदान-प्रदान सरल हुआ है। इससे विभिन्न समाजों के बीच संवाद, सहयोग और आपसी समझ को बढ़ावा मिला है।

वैज्ञानिक अनुसंधान जलवायु परिवर्तन, महामारी, खाद्य संकट और प्राकृतिक आपदाओं जैसी वैश्विक समस्याओं के समाधान के लिए देशों को एक मंच पर ला सकता है। जब वैज्ञानिक समुदाय सीमाओं से परे मिलकर कार्य करता है, तब मानवता के साझा हितों को प्राथमिकता मिलती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण अंधविश्वास, अफवाह और पूर्वाग्रह को चुनौती देकर तर्क, विवेक तथा सहिष्णुता को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार विज्ञान शांति की संस्कृति विकसित करने में सहायक बनता है।

### चिकित्सा विज्ञान और स्वस्थ समाज—

स्वस्थ नागरिक किसी भी विकसित और शांतिपूर्ण समाज की सबसे बड़ी पूँजी होते हैं। चिकित्सा विज्ञान ने अनेक गंभीर बीमारियों की पहचान, रोकथाम और उपचार को संभव बनाया है। टीकाकरण, आधुनिक शल्य चिकित्सा, जाँच तकनीक तथा जीवनरक्षक उपचारों ने करोड़ों लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है।

टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक भी चिकित्सा परामर्श पहुँचाया जा सकता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों के लिए तकनीक आधारित स्वास्थ्य सुविधाएँ उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। हालांकि, इन सुविधाओं का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब वे आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तक सुलभ हों। स्वस्थ समाज में भय, असुरक्षा और असमानता कम करने की बेहतर संभावनाएँ होती हैं।

### शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण—

शिक्षा विकास की आधारशिला है और विज्ञान शिक्षा को अधिक प्रभावी तथा व्यावहारिक बनाता है। डिजिटल कक्षाएँ, ऑनलाइन पुस्तकालय, शैक्षिक वीडियो और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साधनों ने ज्ञान प्राप्त करने के नए अवसर खोले हैं। अब विद्यार्थी अपने स्थान और परिस्थितियों की सीमाओं के बावजूद अनेक विषयों का अध्ययन कर सकते हैं।

विज्ञान की शिक्षा बच्चों में प्रश्न पूछने, प्रमाण खोजने, समस्याओं का विश्लेषण करने और तार्किक निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित करती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति को अफवाहों और भ्रामक प्रचार से बचने में भी मदद करता है। जब समाज में विवेक, सहिष्णुता और संवाद की भावना मजबूत होती है, तब मतभेदों को हिंसा के बजाय विचार-विमर्श से सुलझाने की संभावना बढ़ती है।

### कृषि, उद्योग और आर्थिक विकास—

किसी राष्ट्र की शांति और स्थिरता उसके आर्थिक विकास से भी जुड़ी होती है। बेरोजगारी, गरीबी और संसाधनों की कमी सामाजिक तनाव को बढ़ा सकती है। विज्ञान और तकनीक इन समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

श्री माजीसा प्रकृषि क्षेत्र में उन्नत बीज, मिट्टी की जाँच, मौसम पूर्वानुमान, सूक्ष्म सिंचाई और आधुनिक कृषि उपकरण किसानों की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक हैं। वैज्ञानिक तकनीकों से जल संरक्षण तथा फसल प्रबंधन को बेहतर बनाया जा सकता है। उद्योगों में स्वचालन, अनुसंधान और नवाचार से उत्पादन क्षमता बढ़ती है तथा नए रोजगार क्षेत्रों का विकास होता है। नवीकरणीय ऊर्जा, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान देती है।

लेकिन तकनीकी प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचना आवश्यक है। यदि विज्ञान केवल कुछ लोगों की आर्थिक शक्ति बढ़ाने का साधन बन जाए, तो असमानता बढ़ सकती है। इसलिए वैज्ञानिक विकास के साथ कौशल प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण भी जरूरी है।

## पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास—

आज जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, जल संकट और जैव विविधता का ह्रास पूरी दुनिया के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं। विज्ञान इन समस्याओं के कारणों को समझने और उनके समाधान खोजने में सहायता करता है। स्वच्छ ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधनए जल पुनर्चक्रण, वर्षा जल संचयन और प्रदूषण नियंत्रण जैसी तकनीकें सतत विकास के महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर सरकारें और समाज भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए बेहतर योजनाएँ बना सकते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करता है। विकास का वास्तविक अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना भी है।

## विज्ञान का जिम्मेदार उपयोग आवश्यक—

विज्ञान अपने आप में मानव कल्याण की संभावनाएँ रखता है, लेकिन उसका उपयोग किस उद्देश्य से किया जाता है, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। परमाणु तकनीक ऊर्जा उत्पादन और चिकित्सा में उपयोगी हो सकती है, लेकिन उसका विनाशकारी सैन्य उपयोग मानवता के लिए गंभीर खतरा भी बन सकता है। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल निगरानी और जैव प्रौद्योगिकी के अनुचित उपयोग से निजता, सुरक्षा और मानवाधिकार प्रभावित हो सकते हैं।

इसलिए वैज्ञानिक प्रगति के साथ नैतिकता, पारदर्शिता और जवाबदेही आवश्यक हैं। सरकारों को वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के साथ उसके दुरुपयोग को रोकने के लिए प्रभावी नीतियाँ बनानी चाहिए। वैज्ञानिक संस्थानों, शिक्षकों, उद्योगों और नागरिकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीक का उपयोग मानवता के हित में हो।

शांति एवं विकास के लिए विज्ञान की आवश्यकता आज पहले से कहीं अधिक है। विज्ञान बीमारियों से लड़ने, गरीबी कम करने, शिक्षा का विस्तार करने, पर्यावरण बचाने और विभिन्न समाजों के बीच सहयोग बढ़ाने की अपार क्षमता रखता है। फिर भी केवल वैज्ञानिक आविष्कार मानवता को शांतिपूर्ण भविष्य नहीं दे सकते। इसके लिए मानवीय संवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों, समानता और सहयोग की भावना भी आवश्यक है।

विज्ञान की वास्तविक सफलता तब होगी, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और उसकी उपलब्धियाँ विनाश के बजाय सृजन का माध्यम बनें। हमें ऐसा वैज्ञानिक समाज बनाना होगा, जहाँ ज्ञान के साथ विवेक, प्रगति के साथ प्रकृति का सम्मान और तकनीक के साथ मानवता को भी समान महत्त्व मिले। यही शांति, समृद्धि और सुरक्षित भविष्य की सच्ची आधारशिला है।त



# वर्तमान शिक्षा व्यवस्थाः ज्ञान, संस्कार और रोजगार के बीच संतुलन की चुनौती

**शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक विवेकशील, आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिक का निर्माण करना है।**

प्रत्येक वर्ष 11 नवंबर को भारत में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया जाता है। यह दिवस स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण, सामाजिक समानता और लोकतांत्रिक चेतना का आधार माना था। उनका विश्वास था कि किसी देश की वास्तविक उन्नति उसके नागरिकों की बौद्धिक क्षमता और शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

आज भारत शिक्षा के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर चुका है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का विस्तार हुआ है। डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान के नए द्वार खोले हैं और उच्च शिक्षा तक पहुँच के अवसर बढ़े हैं। इसके बावजूद वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सामने कई ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। क्या हमारी शिक्षा विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में सफल बना रही है, या उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य भी बना रही है?

### शिक्षा का उद्देश्यः डिग्री या व्यक्तित्व निर्माण?—

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को समझना है। आज विद्यार्थियों की सफलता का मूल्यांकन प्रायः अंकों, रैंक और प्राप्त डिग्री के आधार पर किया जाता है। अच्छे अंक प्राप्त करना निस्संदेह महत्त्वपूर्ण है, लेकिन क्या यही प्रतिभा का एकमात्र प्रमाण है?

किसी विद्यार्थी में कला, साहित्य, संगीत, खेल, वैज्ञानिक चिंतन, नेतृत्व अथवा व्यावहारिक कौशल की विशेष क्षमता हो सकती है। यदि शिक्षा व्यवस्था केवल पुस्तकीय ज्ञान और परीक्षाओं को महत्त्व देती है, तो ऐसी अनेक प्रतिभाएँ पीछे छूट सकती हैं।

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में जिज्ञासा, तर्कशीलता, रचनात्मकता, अनुशासन और मानवीय संवेदना विकसित करना होना चाहिए। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाला विद्यार्थी तभी वास्तविक रूप से शिक्षित कहलाएगा, जब वह सही और गलत के बीच अंतर समझ सके तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सके।

### परीक्षा का दबाव और विद्यार्थियों का भविष्य—

आज अनेक विद्यार्थियों के जीवन में परीक्षा, प्रतियोगिता और करियर की चिंता अत्यधिक बढ़ गई है। परिवार और समाज की अपेक्षाएँ भी कई बार बच्चों पर मानसिक दबाव डालती हैं। अच्छे विद्यालय में प्रवेश, ऊँचे अंक, महँगी कोचिंग और प्रतिष्ठित संस्थानों में चयन को सफलता का अनिवार्य मार्ग मान लिया गया है।

इस प्रतिस्पर्धा में विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक बच्चा एक जैसी गति से नहीं सीखता और न ही प्रत्येक विद्यार्थी की प्रतिभा एक समान होती है। शिक्षा व्यवस्था का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचाने और उन्हें आगे बढ़ने के उचित अवसर प्रदान करे।

परीक्षाएँ ज्ञान का आकलन करने का माध्यम हैं, जीवन की संपूर्ण योग्यता का प्रमाणपत्र नहीं। आवश्यक है कि मूल्यांकन पद्धति में परियोजना कार्य, रचनात्मक गतिविधियों, व्यावहारिक ज्ञान और समस्या समाधान की क्षमता को भी उचित स्थान मिले।

### डिजिटल शिक्षाः अवसर भी, चुनौती भी—

तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय, शैक्षिक वीडियो और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साधनों ने विद्यार्थियों के लिए सीखने के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। अब अनेक विषयों की जानकारी घर बैठे प्राप्त की जा सकती है।

लेकिन डिजिटल शिक्षा की सफलता केवल मोबाइल, कंप्यूटर या इंटरनेट की उपलब्धता से सुनिश्चित नहीं होती। देश के अनेक क्षेत्रों में आज भी इंटरनेट, बिजली, उपकरण और

प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए ये बाधाएँ शिक्षा के अवसरों को सीमित कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट पर उपलब्ध हर जानकारी विश्वसनीय नहीं होती। विद्यार्थियों को केवल जानकारी प्राप्त करना ही नहीं, बल्कि उसकी सत्यता जाँचना, स्रोतों को समझना और अपने विवेक का उपयोग करना भी सिखाया जाना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग सीखने में सहायता के लिए हो, न कि स्वतंत्र चिंतन और मौलिक लेखन का विकल्प बन जाए।

### शिक्षकः राष्ट्र निर्माण के वास्तविक शिल्पकार—

किसी भी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है। एक योग्य और संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थी के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचान सकता है तथा उसे सही दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और व्यक्तित्व का निर्माता होता है। इसके लिए शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन और सम्मानजनक कार्य वातावरण मिलना आवश्यक है। गैर-शैक्षणिक कार्यों का अनावश्यक बोझ कम किया जाना चाहिए, ताकि वे अध्यापन और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन पर अधिक ध्यान दे सकें।

विद्यालयों में संवाद और प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। भय और दंड के स्थान पर विश्वास, प्रेरणा और सहयोग पर आधारित शिक्षण वातावरण अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

### शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी—

शिक्षा व्यवस्था पर एक प्रमुख प्रश्न यह भी है कि डिग्री प्राप्त करने के बाद युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर क्यों नहीं मिल पाते। इसके कई कारण हैं, जिनमें रोजगार की सीमित उपलब्धता, कौशल की कमी और उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण का अभाव शामिल हैं।

इस समस्या का समाधान केवल अधिक डिग्रियाँ प्रदान करने में नहींए बल्कि शिक्षा को व्यावहारिक और रोजगारोन्मुख बनाने में है। विद्यालय स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा, कंप्यूटर कौशल, उद्यमिता, संचार क्षमता और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। साथ ही, समाज में प्रत्येक कार्य के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना आवश्यक है। तकनीकी प्रशिक्षण, हस्तकला, कृषि, डिजाइन, सेवा क्षेत्र और स्वरोजगार को भी सम्मानजनक करियर विकल्प के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि युवाओं को अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाना भी होना चाहिए।

### समान अवसर और भारतीय शिक्षा का भविष्य—

शिक्षा तभी सार्थक है, जब उसका लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे। ग्रामीण क्षेत्रों, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों, दिव्यांग विद्यार्थियों और सामाजिक रूप से वंचित समुदायों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। विद्यालयों में सुगम भवन, आवश्यक सहायक उपकरण, समावेशी पाठ्य सामग्री और प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि शारीरिक या अन्य किसी प्रकार की बाधा विद्यार्थियों के सीखने के अधिकार को सीमित न करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी साक्षरता, बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास और मातृभाषा में सीखने जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर बल दिया गया है। इन उद्देश्यों की वास्तविक सफलता प्रभावी क्रियान्वयन, पर्याप्त संसाधनों और निरंतर मूल्यांकन पर निर्भर करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस केवल एक महान शिक्षाविद् को स्मरण करने का अवसर नहीं, बल्कि अपनी शिक्षा व्यवस्था का आत्ममंथन करने का दिन भी है। हमें यह विचार करना होगा कि हमारी शिक्षा विद्यार्थियों को किस दिशा में ले जा रही है और आने वाली पीढ़ियों के लिए हम कैसा समाज निर्मित करना चाहते हैं।

आवश्यकता ऐसी शिक्षा व्यवस्था की है, जहाँ ज्ञान के साथ संस्कार, तकनीक के साथ विवेक, प्रतिस्पर्धा के साथ सहयोग और सफलता के साथ संवेदनशीलता को भी महत्त्व मिले। जहाँ विद्यार्थी प्रश्न पूछने से न डरें, शिक्षक प्रेरणा का स्रोत बनें और आर्थिक परिस्थितियाँ किसी बच्चे की प्रतिभा के विकास में बाधा न बनें।

किसी राष्ट्र का भविष्य उसके विद्यालयों में आकार लेता है। यदि हमें एक समृद्ध, आत्मनिर्भर और लोकतांत्रिक भारत का निर्माण करना है, तो शिक्षा को केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित न रखकर जीवन, चरित्र और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना होगा। यही राष्ट्रीय शिक्षा दिवस की भावना है और यही एक सशक्त भारत के निर्माण का मार्ग भी।

# बचपन बचाना है, तो भविष्य बचाना होगा

## बच्चों की मुस्कान में छिपा है राष्ट्र की प्रगति का वास्तविक चित्र

'बच्चे देश का भविष्य ही नहीं, वर्तमान की सबसे अनमोल धरोहर भी हैं। उनका सुरक्षित, शिक्षित और खुशहाल बचपन ही एक सशक्त राष्ट्र की नींव रखता है।'

बचपन जीवन का वह अनमोल समय है, जिसमें सपने आकार लेते हैं, जिज्ञासाएँ जन्म लेती हैं और व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। बच्चों की हँसी, उनकी निश्छलता और उनकी कल्पनाशीलता किसी भी समाज की सबसे बड़ी पूँजी है। इसी महत्त्व को रेखांकित करने के लिए भारत में प्रत्येक वर्ष 14 नवंबर को बाल दिवस मनाया जाता है। यह दिन देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। बच्चों के प्रति उनके विशेष स्नेह के कारण वे 'चाचा नेहरू' के नाम से लोकप्रिय हुए।

बाल दिवस केवल उत्सव मनाने, मिठाइयाँ बाँटने या विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने का अवसर नहीं है। यह दिन हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या देश का प्रत्येक बच्चा सुरक्षित, शिक्षित, स्वस्थ और सम्मानपूर्ण जीवन जी पा रहा है?

### बचपन: अधिकार भी, जिम्मेदारी भी—

प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खेल और अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार है। ये सुविधाएँ किसी बच्चे पर किया गया उपकार नहीं, बल्कि उसके अधिकार हैं। बच्चों को ऐसा वातावरण मिलना चाहिए, जहाँ वे बिना भय के सीख सकें, अपनी प्रतिभा विकसित कर सकें और अपने सपनों को साकार करने का प्रयास कर सकें।

लेकिन वास्तविकता यह है कि अनेक बच्चे आज भी गरीबी, कुपोषण, बाल श्रम, शोषण और शिक्षा से वंचित रहने जैसी समस्याओं का सामना करते हैं। कुछ बच्चों के पास खेलने के लिए मैदान नहीं, पढ़ने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं और अपनी बात कहने के लिए भरोसेमंद व्यक्ति तक नहीं होता। ऐसे में बाल दिवस की सार्थकता तभी है, जब हम उत्सव के साथ इन समस्याओं के समाधान का संकल्प भी लें।

### शिक्षा: सपनों तक पहुँचने का मार्ग—

शिक्षा बच्चों को केवल अक्षर ज्ञान नहीं देती, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों, कर्तव्यों और संभावनाओं से परिचित कराती है। एक शिक्षित बच्चा भविष्य में आत्मनिर्भर बनने के साथ समाज के विकास में भी योगदान दे सकता है।

आज शिक्षा के अवसर बढ़े हैं, फिर भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और दिव्यांग बच्चों को विशेष सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक, पुस्तकालय, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, खेल सामग्री और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध होना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को केवल अच्छे अंक प्राप्त करने की दौड़ में शामिल करना नहीं होना चाहिए। उन्हें प्रश्न पूछने, नई चीजें सीखने, गलतियों से सुधार करने और अपनी रुचियों को पहचानने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। प्रत्येक बच्चा अलग होता है और उसकी प्रतिभा को विकसित होने के लिए उचित अवसर चाहिए।

### प्रतिस्पर्धा के बीच खोती बचपन की सहजता—

आज के समय में बच्चों पर पढ़ाई, परीक्षाओं और भविष्य की सफलता का दबाव बढ़ता दिखाई देता है। माता-पिता की अपेक्षाएँ, सामाजिक तुलना और प्रतियोगिताओं में आगे निकलने की होड़ कई बार बच्चों के स्वाभाविक विकास को प्रभावित करती हैं। अच्छे अंक और उपलब्धियाँ महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और प्रसन्नता भी उतने ही आवश्यक हैं। यदि कोई बच्चा परीक्षा में कम अंक प्राप्त करता है, तो उसे अपमानित करने के बजाय उसकी कठिनाइयों को समझना चाहिए। हर बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर या अधिकारी ही बने, यह आवश्यक नहीं। कोई अच्छा कलाकार, लेखक, खिलाड़ी, वैज्ञानिक, शिल्पकार या उद्यमी बन सकता है।

माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों की तुलना दूसरों से करने के बजाय उनकी अपनी प्रगति पर ध्यान देना चाहिए। उन्हें यह विश्वास दिलाना चाहिए कि असफलता अंत नहीं, बल्कि सीखने का एक अवसर है।

### मोबाइल और डिजिटल दुनिया की चुनौती–

डिजिटल तकनीक ने बच्चों के लिए ज्ञान और मनोरंजन के नए अवसर खोले हैं। ऑनलाइन पुस्तकें, शैक्षिक वीडियो और सीखने वाले ऐप उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन मोबाइल और इंटरनेट का अनियंत्रित उपयोग बच्चों की नींद, शारीरिक गतिविधियों, एकाग्रता और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है। बच्चों को तकनीक से पूरी तरह दूर रखना व्यावहारिक समाधान नहीं है। इसके बजाय उन्हें सुरक्षित और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार सिखाना चाहिए। अभिभावकों को बच्चों के साथ समय बिताना, उनकी ऑनलाइन गतिविधियों के प्रति सजग रहना और उनकी उम्र के अनुरूप सीमाएँ निर्धारित करना आवश्यक है। खेलकूद, पुस्तकें पढ़ना, प्रकृति के साथ समय बिताना और परिवार के सदस्यों से बातचीत करना भी बच्चों के विकास के लिए जरूरी है। तकनीक बचपन को समृद्ध बनाए, उसका स्थान न ले।

### बाल श्रम और शोषण: समाज के सामने प्रश्न–

जब किसी बच्चे के हाथ में पुस्तक की जगह मजदूरी का औजार होता है, तब समाज को अपने विकास के दावों पर विचार करना चाहिए। आर्थिक मजबूरी के कारण बच्चों का श्रम करना उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य को प्रभावित करता है। बाल विवाह, हिंसा, दुर्व्यवहार और ऑनलाइन शोषण भी बच्चों की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल कानून बनाने से नहीं होगा। कानूनों का प्रभावी पालन, जरूरतमंद परिवारों को सहायता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समाज की जागरूकता भी आवश्यक है। बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि किसी अनुचित व्यवहार या खतरे की स्थिति में वे विश्वसनीय वयस्क से सहायता माँग सकते हैं।

### बच्चों को सुनना भी जरूरी है–

अक्सर बड़े लोग बच्चों को निर्देश देते हैं, लेकिन उनकी बात सुनने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकालते। बच्चों की समस्याएँ हमें छोटी लग सकती हैं, पर उनके लिए वे बहुत बड़ी हो सकती हैं। उनकी भावनाओं का सम्मान करना और उनके विचारों को महत्त्व देना स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक है। परिवार और विद्यालय में ऐसा वातावरण होना चाहिए, जहाँ बच्चे बिना डर के अपनी बात कह सकें। उनकी जिज्ञासाओं को दबाने के बजाय प्रोत्साहित किया जाए और अनुशासन के नाम पर अपमान या हिंसा का सहारा न लिया जाए। बच्चों को निर्णय लेने के छोटे-छोटे अवसर देना उन्हें जिम्मेदार और आत्मविश्वासी बनाता है।

बाल दिवस हमें याद दिलाता है कि बच्चों का भविष्य केवल सरकार या विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का दायित्व है। माता-पिता, शिक्षक, प्रशासन और नागरिकों को मिलकर ऐसा वातावरण बनाना होगा, जहाँ कोई बच्चा गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रहे, कोई बच्चा भय में न जिए और किसी बच्चे की प्रतिभा अवसरों के अभाव में दम न तोड़े। बच्चों को महँगे उपहार देने से अधिक महत्त्वपूर्ण है उन्हें समय देना, उनकी बातें सुनना, उनके सपनों का सम्मान करना और उन्हें सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना। सच्चा बाल दिवस तब होगा, जब प्रत्येक बच्चे के चेहरे पर मुस्कान हो, हाथों में पुस्तक हो, आँखों में सपने हों और उन सपनों को पूरा करने के लिए समान अवसर उपलब्ध हों। क्योंकि बचपन केवल जीवन का एक चरण नहीं, बल्कि आने वाले समाज का निर्माणकाल है। बचपन सुरक्षित रहेगा, तभी राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।



# पत्रकारिता: लोकतंत्र का प्रहरी या बाजार का खिलौना?

## बदलते दौर में मीडिया की विश्वसनीयता, स्वतंत्रता और जिम्मेदारी पर एक विचारणीय टिप्पणी

**'पत्रकारिता की शक्ति उसकी आवाज की ऊँचाई में नहीं, बल्कि उसके प्रश्नों की सच्चाई और उसके शब्दों की विश्वसनीयता में निहित होती है।'**

प्रत्येक वर्ष 16 नवंबर को भारत में राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। इसी दिन वर्ष 1966 में भारतीय प्रेस परिषद ने कार्य करना प्रारंभ किया था। इस दिवस का उद्देश्य स्वतंत्र और उत्तरदायी पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करना है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि वह जनता की आवाज को शासन तक पहुँचाने, सत्ता से सवाल पूछने और समाज को जागरूक बनाने का कार्य करती है।

लेकिन आज पत्रकारिता एक ऐसे दौर से गुजर रही है, जहाँ उसकी उपलब्धियों के साथ अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी दिखाई देती हैं। समाचारों की गति बढ़ी है, संचार के साधन व्यापक हुए हैं और सूचना तक पहुँच पहले से आसान हुई है। इसके बावजूद एक प्रश्न लगातार सामने आता है- क्या समाचार माध्यम अपनी मूल जिम्मेदारी का निर्वहन उसी निष्पक्षता और निर्भीकता से कर पा रहे हैं, जिसकी अपेक्षा लोकतंत्र उनसे करता है?

### खबर और शोर के बीच उलझती पत्रकारिता—

एक समय था, जब समाचार-पत्रों की पहचान उनकी विश्वसनीयता, भाषा की शुद्धता और तथ्यों की प्रमाणिकता से होती थी। समाचार प्रकाशित करने से पहले जानकारी की पुष्टि करना पत्रकारिता का अनिवार्य हिस्सा माना जाता था। आज भी अनेक पत्रकार और मीडिया संस्थान गंभीर शोध, खोजी पत्रकारिता तथा जनहित के मुद्दों पर सराहनीय कार्य कर रहे हैं। लेकिन समाचारों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने एक नई प्रवृत्ति को भी जन्म दिया है। कई बार किसी खबर की सत्यता से अधिक महत्त्व उसे सबसे पहले प्रसारित करने को दिया जाता है। टेलीविजन पर बहस के नाम पर शोर, आरोप-प्रत्यारोप और उत्तेजक प्रस्तुतियाँ दिखाई देती हैं। समाचारों की गंभीरता पीछे छूट जाती है और दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना प्राथमिकता बन जाता है। पत्रकारिता का उद्देश्य समाज को जानकारी देना हैए न कि उसे अनावश्यक तनाव, भय या भ्रम में डालना। खबर जितनी महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण उसका संदर्भ, उसकी पुष्टि और उसकी निष्पक्ष प्रस्तुति भी है।

### सत्ता से सवाल पूछना पत्रकारिता का धर्म—

लोकतंत्र में सरकारें जनता के प्रति जवाबदेह होती हैं। इस जवाबदेही को मजबूत बनाने में स्वतंत्र पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सरकारी योजनाओं की वास्तविक स्थिति, सार्वजनिक धन का उपयोग, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य और नागरिक अधिकारों जैसे विषयों पर प्रश्न उठाना पत्रकार का दायित्व है। यदि किसी व्यवस्था में कमियाँ हैं, तो उन्हें सामने लाना विरोध नहीं, बल्कि जनहित की सेवा है। इसी प्रकार सरकार के अच्छे कार्यों और उपलब्धियों को तथ्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करना भी पत्रकारिता का हिस्सा है।

समस्या तब पैदा होती है, जब समाचारों का मूल्यांकन तथ्यों के बजाय राजनीतिक झुकाव के आधार पर होने लगता है। सत्ता के पक्ष में होने या उसके विरोध में होने को ही पत्रकारिता की कसौटी नहीं बनाया जा सकता। पत्रकारिता की असली कसौटी यह है कि वह सही तथ्य किसके पक्ष में जाते हैं, इसकी परवाह किए बिना जनता के सामने रखे।

### आर्थिक दबाव और संपादकीय स्वतंत्रता—

मीडिया संस्थानों के संचालन में आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। विज्ञापन, सदस्यता और अन्य व्यावसायिक स्रोत समाचार माध्यमों को चलाने में सहायता करते हैं। लेकिन जब आर्थिक हित संपादकीय निर्णयों को प्रभावित करने लगते हैं, तब पत्रकारिता की स्वतंत्रता पर प्रश्न उठने लगते हैं। बड़े व्यावसायिक समूहों का मीडिया पर बढ़ता प्रभाव, विज्ञापन आधारित आय और बाजार में प्रतिस्पर्धा कुछ संस्थानों के लिए गंभीर चुनौती बन सकते हैं। कई बार जनहित के महत्त्वपूर्ण विषयों को पर्याप्त स्थान नहीं मिलता, जबकि मनोरंजन और सनसनीखेज समाचारों को अधिक प्रमुखता दी जाती है। स्थानीय और छोटे समाचार-पत्रों की स्थिति भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। सीमित संसाधनों के बीच काम करने वाले पत्रकारों को विज्ञापन, वेतन, तकनीक और वितरण से संबंधित कठिनाईयों

कठिनाइयों सामना करना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में निष्पक्ष पत्रकारिता को बनाए रखने के लिए संस्थागत सहयोग और आर्थिक पारदर्शिता आवश्यक हैं।

### सोशल मीडिया और फेक न्यूज का संकट—

डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता का स्वरूप बदल दिया है। अब मोबाइल फोन से ही कोई व्यक्ति समाचार, तस्वीर या वीडियो लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है। इस बदलाव ने नागरिक पत्रकारिता को अवसर दिया है, लेकिन गलत सूचना के प्रसार को भी आसान बनाया है। पुराने वीडियो को नई घटना बताकर प्रसारित करना, अधूरी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकालना और बिना पुष्टि के संदेश साझा करना समाज में भ्रम पैदा कर सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार नकली तस्वीरें, आवाजें और वीडियो इस समस्या को और गंभीर बना रहे हैं। ऐसे समय में पत्रकार का दायित्व केवल सूचना देना नहीं, बल्कि उसकी सत्यता की जाँच करना भी है। पाठकों और दर्शकों को भी किसी खबर को साझा करने से पहले उसके स्रोत तथा प्रमाण की पड़ताल करनी चाहिए। डिजिटल माध्यमों पर लोकप्रियता और विश्वसनीयता दो अलग-अलग बातें हैं।

### पत्रकारों की सुरक्षा और स्वतंत्रता—

स्वतंत्र पत्रकारिता के लिए आवश्यक है कि पत्रकार बिना भय के अपना कार्य कर सकें। लेकिन जब किसी पत्रकार को उसकी रिपोर्टिंग के कारण धमकी, हिंसा या अनुचित दबाव का सामना करना पड़ता है, तो इसका प्रभाव केवल उस व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। इससे जनहित के प्रश्न उठाने का वातावरण भी प्रभावित हो सकता है। पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करनाए उनकी शिकायतों की निष्पक्ष जाँच करना और दोषियों के विरुद्ध कानून के अनुसार कार्रवाई करना आवश्यक है। साथ ही पत्रकारिता की स्वतंत्रता के साथ उसकी जवाबदेही भी बनी रहनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति की प्रतिष्ठा, निजता और अधिकारों का सम्मान करना पत्रकारिता के नैतिक दायित्व का हिस्सा है।

### समाधान: विश्वसनीयता ही सबसे बड़ी पूँजी—

पत्रकारिता को मजबूत बनाने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर लौटना आवश्यक है- तथ्यों की पुष्टि, निष्पक्षता, स्रोतों की जाँच, त्रुटियों का सार्वजनिक सुधार और जनहित को प्राथमिकता। समाचार माध्यमों को विज्ञापन और संपादकीय सामग्री के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना चाहिए। शिक्षण संस्थानों में मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना, पत्रकारों को आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण देना और स्थानीय पत्रकारिता को मजबूत करना भी आवश्यक है। प्रेस परिषद तथा अन्य संबंधित संस्थाओं को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने के लिए पर्याप्त संस्थागत क्षमता और निष्पक्ष कार्यप्रणाली की जरूरत है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पत्रकारिता को अपनी विश्वसनीयता जनता के विश्वास से अर्जित करनी होगी। यह विश्वास किसी प्रचार अभियान से नहीं, बल्कि निरंतर जिम्मेदार और सत्यनिष्ठ कार्य से बनता है।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस केवल पत्रकारों को सम्मानित करने का अवसर नहीं, बल्कि पत्रकारिता के आत्ममंथन का दिन भी है। यह याद दिलाता है कि समाचार माध्यमों की स्वतंत्रता लोकतंत्र के लिए जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक उनकी जिम्मेदारी भी है। पत्रकारिता न किसी राजनीतिक दल की प्रवक्ता होनी चाहिए, न किसी व्यावसायिक हित की कठपुतली और न ही सनसनी फैलाने का माध्यम। उसे जनता के प्रश्नों, वंचितों की आवाज और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

लोकतंत्र में मजबूत प्रेस का अर्थ केवल अधिक समाचार चैनल या अधिक समाचार-पत्र नहीं, बल्कि ऐसा निर्भीक और विश्वसनीय मीडिया है, जो सत्ता से प्रश्न पूछ सके, समाज को आईना दिखा सके और अपनी गलतियों को स्वीकार करने का साहस भी रखे। जिस दिन समाचार की सुर्खियों से अधिक महत्त्व सत्य को मिलने लगेगा, उस दिन पत्रकारिता अपने वास्तविक उद्देश्य के और निकट होगी।



मजबूत लोकतंत्र के लिए जरूरी है — स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार पत्रकारिता

# टेलीविजनः कल, आज और कल

## श्वेत-श्याम पर्दे से डिजिटल दुनिया तक का सफर और बदलते समाज की तस्वीर

मनुष्य ने जब संचार के साधनों का विकास किया, तब उसका उद्देश्य केवल सूचना पहुँचाना नहीं, बल्कि दुनिया को समझने और एक-दूसरे से जुड़ने के नए रास्ते खोलना भी था। टेलीविजन इसी यात्रा की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसने घर बैठे दुनिया के दृश्य दिखाए, समाचारों को जीवंत बनाया और मनोरंजन को परिवार के जीवन का हिस्सा बना दिया। समय के साथ टेलीविजन का स्वरूप बदलता गया। कभी यह पूरे परिवार के लिए कौतूहल का विषय था, आज यह डिजिटल तकनीक और इंटरनेट से जुड़ा एक व्यापक माध्यम है तथा भविष्य में इसका स्वरूप और अधिक व्यक्तिगत एवं संवादपरक होने की संभावना है। प्रत्येक वर्ष 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र ने इस दिवस को टेलीविजन के महत्त्व और वैश्विक संवाद में उसकी भूमिका को रेखांकित करने के लिए स्थापित किया था।

### टेलीविजन का कलः कौतूहल से पारिवारिक संस्कृति तक—

टेलीविजन का शुरुआती दौर आज की पीढ़ी के लिए किसी कहानी से कम नहीं है। भारत में 1959 में प्रायोगिक टेलीविजन प्रसारण शुरू हुआ और 1965 में नियमित प्रसारण आरंभ हुआ। शुरुआती दिनों में टेलीविजन हर घर में उपलब्ध नहीं था। जिन घरों में यह होता था, वहाँ आसपास के लोग भी कार्यक्रम देखने के लिए एकत्रित हो जाते थे। उस समय टेलीविजन का पर्दा छोटा थाए तस्वीरें श्वेत.श्याम थीं और चैनलों की संख्या भी सीमित थी। फिर भी उसका आकर्षण असाधारण था। समाचारए शैक्षिक कार्यक्रमए कृषि संबंधी जानकारी और मनोरंजन के चुनिंदा कार्यक्रम लोगों को नई दुनिया से परिचित कराते थे। रामायण, महाभारत, हम लोग, बुनियाद और चित्रहार जैसे कार्यक्रमों ने दर्शकों की स्मृतियों में स्थायी स्थान बनाया। रविवार की सुबह धारावाहिक देखने के लिए सड़कों का सुनसान हो जाना उस समय के टेलीविजन प्रभाव का लोकप्रिय उदाहरण है। टेलीविजन केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि परिवार और समुदाय को जोड़ने वाला माध्यम भी था।

### टेलीविजन का आजः सुविधा, सूचना और प्रतिस्पर्धा—

आज टेलीविजन तकनीकी विकास के एक नए युग में प्रवेश कर चुका है। रंगीन तस्वीरों से लेकर हाई डेफिनिशनए स्मार्ट टीवी और इंटरनेट आधारित सेवाओं तक इसका सफर उल्लेखनीय रहा है। अब दर्शक समाचारए खेलए फिल्मेंए धारावाहिक और वृत्तचित्र अपनी पसंद के अनुसार देख सकते हैं। अनेक कार्यक्रम मोबाइल और कंप्यूटर पर भी उपलब्ध हैं।

समाचारों के क्षेत्र में टेलीविजन ने घटनाओं को तुरंत दर्शकों तक पहुँचाने की क्षमता विकसित की है। प्राकृतिक आपदाओंए चुनावोंए वैज्ञानिक उपलब्धियों और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी लोगों तक शीघ्र पहुँच सकती है। कृषिए स्वास्थ्यए शिक्षा और सरकारी योजनाओं से संबंधित कार्यक्रम भी जनजागरूकता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं।

लेकिन आधुनिक टेलीविजन के सामने कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी हैं। चैनलों के बीच दर्शकों की संख्या बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा कई बार समाचारों की गंभीरता पर हावी हो जाती है। सनसनीखेज सुर्खियाँए अनावश्यक बहसें और अधूरी जानकारी दर्शकों को भ्रमित कर सकती हैं। जब किसी समाचार का उद्देश्य सच्चाई बताने के बजाय केवल ध्यान आकर्षित करना रह जाएए तब माध्यम की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। टेलीविजन की एक अन्य चुनौती यह है कि लगातार स्क्रीन के सामने समय बिताने से बच्चों की शारीरिक गतिविधियाँए पढ़ने की आदत और पारिवारिक संवाद प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करना आवश्यक है।

### टेलीविजन और बदलते सामाजिक मूल्य—

टेलीविजन समाज का प्रतिबिंब भी है और समाज को प्रभावित करने वाला माध्यम भी। इसके कार्यक्रम लोगों की भाषा, पहनावे, खानपान, विचारों और जीवनशैली पर प्रभाव डाल सकते हैं। अच्छे कार्यक्रम वैज्ञानिक सोच, सामाजिक सद्भाव, महिला सशक्तीकरण, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं। इसके विपरीत, हिंसा,

भ्रामक धारणाओं और अवास्तविक जीवनशैली को बढ़ावा देने वाली सामग्री का अनुचित प्रभाव भी पड़ सकता है। विशेषकर बच्चों के लिए उम्र के अनुरूप कार्यक्रमों का चयन आवश्यक है। टेलीविजन की वास्तविक उपयोगिता इस बात से निर्धारित होती है कि वह दर्शकों को कितना ज्ञान देता है, उनकी सोच को कितना व्यापक बनाता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में कितनी सहायता करता है।

### टेलीविजन का कलः कृत्रिम बुद्धिमत्ता और व्यक्तिगत अनुभव—

भविष्य का टेलीविजन आज की तुलना में अधिक तकनीकी और संवादपरक हो सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से दर्शकों की रुचि के अनुसार सामग्री प्रस्तुत की जा सकेगी। भाषा अनुवाद की उन्नत तकनीकें अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोगों को एक ही कार्यक्रम समझने में मदद कर सकती हैं। इंटरनेट और स्मार्ट उपकरणों के एकीकरण से टेलीविजन केवल प्रसारण देखने का माध्यम न रहकर शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, डिजिटल सेवाओं और संवाद का केंद्र बन सकता है। आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता जैसी तकनीकें दर्शकों को अधिक जीवंत अनुभव देने की क्षमता रखती हैं। हालाँकि, भविष्य की इन संभावनाओं के साथ निजता, बच्चों की सुरक्षा, गलत सूचना और डिजिटल निर्भरता जैसे प्रश्न भी जुड़े रहेंगे। तकनीक जितनी उन्नत होगी, उसके जिम्मेदार उपयोग की आवश्यकता भी उतनी ही बढ़ेगी। यह भी जरूरी होगा कि ग्रामीण क्षेत्रों और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को डिजिटल सुविधाओं से वंचित न रहना पड़े। टेलीविजन का कल सीमित साधनों और सामूहिक अनुभवों का दौर था। उसका आज तकनीकी सुविधाओं, तीव्र सूचना प्रवाह और विविध विकल्पों का युग है। वहीं उसका कल कृत्रिम बुद्धिमत्ता, व्यक्तिगत पसंद और अधिक संवादपरक अनुभवों से प्रभावित हो सकता है। लेकिन तकनीक बदलने के बावजूद टेलीविजन की मूल जिम्मेदारी नहीं बदलनी चाहिए। उसे सत्यपूर्ण जानकारी, स्वस्थ मनोरंजन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सामाजिक चेतना का माध्यम बने रहना चाहिए। दर्शकों को भी अपनी पसंद और देखने के समय के प्रति सजग रहना होगा।

टेलीविजन की सफलता केवल उसकी स्क्रीन के आकार, तस्वीर की स्पष्टता या चैनलों की संख्या से नहीं मापी जानी चाहिए। उसकी वास्तविक सफलता इस बात में है कि वह मनुष्य के ज्ञान को कितना बढ़ाता है, समाज को कितना जोड़ता है और आने वाली पीढ़ियों को कितना बेहतर दृष्टिकोण प्रदान करता है। तकनीक का भविष्य चाहे जितना बदल जाए, टेलीविजन का उद्देश्य मानव जीवन को अधिक जागरूक, समृद्ध और संवेदनशील बनाना ही रहना चाहिए।



# दिव्यांगता नहीं, अवसरों की कमी है असली चुनौती

## समान अधिकार, सम्मान और आत्मनिर्भरता से ही बनेगा समावेशी समाज

**'किसी व्यक्ति की पहचान उसकी शारीरिक सीमाओं से नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं, विचारों और संकल्प से होनी चाहिए।'**

प्रत्येक वर्ष 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित इस दिवस का उद्देश्य दिव्यांगजनों के अधिकारों, सम्मान, समान अवसरों और समाज में उनकी पूर्ण भागीदारी के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति का आकलन केवल उसकी आर्थिक समृद्धि से नहीं, बल्कि इस बात से भी किया जाना चाहिए कि वह अपने प्रत्येक नागरिक को कितना सम्मान और समान अवसर प्रदान करता है। दिव्यांगता किसी व्यक्ति की संपूर्ण पहचान नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशिष्ट क्षमताएँ, रुचियाँ और संभावनाएँ होती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज उन क्षमताओं को विकसित करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करे। यदि अवसर, संसाधन और सहयोग उपलब्ध हों, तो दिव्यांगजन शिक्षा, रोजगार, कला, साहित्य, खेल, विज्ञान और सामाजिक सेवा सहित प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं।

### दिव्यांगता से अधिक बड़ी चुनौती सामाजिक दृष्टिकोण—

दिव्यांगजनों के सामने आने वाली अनेक कठिनाइयाँ केवल उनकी शारीरिक या मानसिक स्थिति के कारण नहीं होतीं, बल्कि समाज और व्यवस्था द्वारा उत्पन्न बाधाओं से भी जुड़ी होती हैं। सीढ़ियों वाले सार्वजनिक भवन, सुगम परिवहन का अभाव, अनुपयुक्त शौचालय, रोजगार में भेदभाव और शिक्षा संस्थानों में आवश्यक सुविधाओं की कमी उनके लिए सामान्य गतिविधियों को भी कठिन बना सकती है। कई बार सहानुभूति के नाम पर दिव्यांगजनों की क्षमताओं को कम आँका जाता है। उन्हें निर्णय लेने में सक्षम व्यक्ति के बजाय हमेशा सहायता के पात्र के रूप में देखा जाता है। यह सोच बदलना आवश्यक है। सहायता और सहयोग का उद्देश्य किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता कम करना नहींए बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनने में सक्षम बनाना होना चाहिए। दिव्यांगजनों को दया नहीं, सम्मान चाहिए, उपेक्षा नहीं, अवसर चाहिए और अलगाव नहीं, समाज में बराबरी का स्थान चाहिए।

### शिक्षा: आत्मनिर्भरता की पहली सीढ़ी—

शिक्षा प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। दिव्यांग बच्चों को भी ऐसा शैक्षिक वातावरण मिलना चाहिए, जहाँ वे अपनी क्षमताओं के अनुरूप सीख सकें और आगे बढ़ सकें। इसके लिए सुगम विद्यालय भवन, प्रशिक्षित शिक्षक, ब्रेल लिपि, सांकेतिक भाषा, सहायक तकनीक और आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना महत्त्वपूर्ण है। समावेशी शिक्षा का अर्थ केवल दिव्यांग बच्चों को सामान्य विद्यालय में प्रवेश देना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि वे पढ़ाई, खेलकूद और अन्य गतिविधियों में समान रूप से भाग ले सकें। जब किसी बच्चे को उसकी आवश्यकता के अनुसार सहयोग मिलता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षा उसे न केवल रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करती है, बल्कि अपने अधिकारों को समझने और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान करती है।

### रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता—

आर्थिक आत्मनिर्भरता सम्मानपूर्ण जीवन का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। दिव्यांगजनों को रोजगार के अवसर प्रदान करना केवल सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राष्ट्र की मानवीय और आर्थिक क्षमता का बेहतर उपयोग भी है। आज कंप्यूटर, ग्राफिक डिजाइन, डिजिटल मार्केटिंग, लेखन, अनुवाद, ऑनलाइन शिक्षण और अनेक अन्य क्षेत्रों में ऐसे अवसर उपलब्ध हैं, जिनमें कार्यस्थल की उचित व्यवस्था और तकनीकी सहयोग के साथ दिव्यांगजन अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन रोजगार प्राप्त करने में अब भी अनेक बाधाएँ सामने आती हैं। कभी शारीरिक सुगमता की कमी, कभी नियोक्ताओं की पूर्वधारणाएँ और कभी उचित प्रशिक्षण का अभाव अवसरों को सीमित कर देता है। आवश्यकता ऐसी कार्यसंस्कृति विकसित करने की है, जहाँ व्यक्ति की योग्यता को

प्राथमिकता मिले और कार्यस्थल उसकी जरूरतों के अनुरूप बनाया जा सके। सरकारी तथा निजी संस्थानों को कौशल विकास, निष्पक्ष चयन प्रक्रियाए सहायक उपकरण और उचित कार्य व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। स्वरोजगार और उद्यमिता को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

### तकनीक ने खोले नई संभावनाओं के द्वार–

आधुनिक तकनीक दिव्यांगजनों के जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला रही है। स्क्रीन रीडर दृष्टिबाधित व्यक्तियों को डिजिटल सामग्री पढ़ने में सहायता करते हैं। सांकेतिक भाषा और कैप्शन श्रवणबाधित व्यक्तियों के लिए संवाद को सुगम बनाते हैं। व्हीलचेयर, कृत्रिम अंग और अन्य सहायक उपकरण आवागमन तथा दैनिक गतिविधियों में मदद कर सकते हैं। इंटरनेट और डिजिटल कार्यस्थलों ने घर से काम करने के अवसर भी बढ़ाए हैं। लेकिन तकनीक का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब उपकरण किफायती हों, वेबसाइटें और डिजिटल सेवाएँ सुगम हों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में भी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। तकनीक का उद्देश्य दिव्यांगजनों को समाज से अलग करना नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में अधिक स्वतंत्रता के साथ भाग लेने में सक्षम बनाना होना चाहिए।

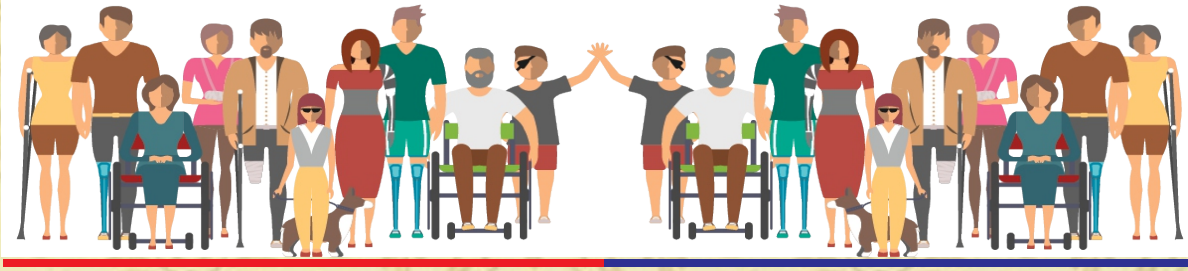
### प्रेरणा से आगे, समानता की ओर–

दिव्यांगजनों की उपलब्धियाँ समाज को यह समझने का अवसर देती हैं कि मानवीय क्षमता को केवल शारीरिक सामर्थ्य से नहीं आँका जा सकता। अनेक दिव्यांग व्यक्तियों ने खेल, साहित्य, कला, विज्ञान और सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रतिभा से उल्लेखनीय पहचान बनाई है। फिर भी प्रत्येक दिव्यांग व्यक्ति से असाधारण उपलब्धि की अपेक्षा करना उचित नहीं है। सम्मानपूर्ण जीवन का अधिकार किसी उपलब्धि या पुरस्कार पर निर्भर नहीं होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने, काम करने, परिवार बनाने, मनोरंजन करने और अपने जीवन के निर्णय लेने का समान अधिकार है। समाज को प्रेरक कहानियों के साथ-साथ उन सामान्य बाधाओं पर भी ध्यान देना चाहिए, जिन्हें दूर करके दिव्यांगजनों का जीवन अधिक स्वतंत्र और सहज बनाया जा सकता है।

### कानून से आगे, व्यवहार में बदलाव जरूरी–

भारत में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 दिव्यांगजनों के अधिकारों और समान अवसरों की सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण कानूनी आधार प्रदान करता है। लेकिन कानूनों की सफलता उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। सार्वजनिक भवनों, परिवहन, शिक्षा संस्थानों, अस्पतालों और सरकारी सेवाओं को अधिक सुगम बनाना आवश्यक है। स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संस्थाओं, शैक्षिक संगठनों और नागरिकों को मिलकर ऐसी व्यवस्था विकसित करनी चाहिए, जिसमें किसी व्यक्ति को केवल अपनी दिव्यांगता के कारण आवश्यक सुविधाओं से वंचित न होना पड़े। परिवारों की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। दिव्यांगजनों को निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना, उनकी राय सुनना और उनकी क्षमताओं पर विश्वास करना आत्मसम्मान को मजबूत करता है।

अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस केवल एक दिन का आयोजन नहीं, बल्कि समाज की संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की परीक्षा है। हमें ऐसा भारत बनाना है, जहाँ दिव्यांगता किसी व्यक्ति के सपनों, अधिकारों और संभावनाओं के रास्ते में अनावश्यक बाधा न बने। समावेशी समाज वही है, जहाँ सड़कें विद्यालय, कार्यालय, परिवहन और डिजिटल सेवाएँ सभी के लिए सुलभ हों, जहाँ रोजगार योग्यता के आधार पर मिले और जहाँ किसी व्यक्ति का सम्मान उसकी शारीरिक क्षमता से तय न किया जाए। दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने का अर्थ उन्हें समाज की मुख्यधारा में स्थान देना भर नहीं, बल्कि ऐसी मुख्यधारा का निर्माण करना है, जिसमें हर व्यक्ति के लिए सम्मान और समान अवसर पहले से मौजूद हों। जब हम बाधाएँ हटाएँगे, अवसर बढ़ाएँगे और दृष्टिकोण बदलेंगे, तभी एक न्यायपूर्ण, आत्मनिर्भर और संवेदनशील समाज का सपना साकार होगा।



# डॉ. आंबेडकर : समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय के अमर प्रहरी



**'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो'– यह संदेश आज भी सामाजिक परिवर्तन की सबसे सशक्त प्रेरणाओं में से एक है।**

भारत के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनका योगदान किसी एक कालखंड तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा प्रदान करता है। डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर ऐसे ही महान विचारक, समाज सुधारक, विधिवेत्ता और राष्ट्र निर्माता थे। प्रत्येक वर्ष 6 दिसंबर को उनके महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन उनके संघर्षों, विचारों और राष्ट्र के प्रति योगदान को स्मरण करने के साथ-साथ सामाजिक समानता तथा न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराने का अवसर भी है।

## संघर्षों से शिखर तक का सफर–

14 अप्रैल 1891 को जन्मे डॉ. आंबेडकर ने अपने जीवन में सामाजिक भेदभाव और अस्पृश्यता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना किया। लेकिन उन्होंने कठिन परिस्थितियों को अपनी प्रगति में बाधा नहीं बनने दिया। शिक्षा को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाकर उन्होंने उच्च अध्ययन किया और अर्थशास्त्र, कानून तथा राजनीति के क्षेत्र में गहन ज्ञान अर्जित किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा व्यक्ति को केवल व्यक्तिगत उन्नति का अवसर नहीं देती, बल्कि अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्थाओं को बदलने की शक्ति भी प्रदान करती है। उन्होंने वंचित वर्गों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने और सम्मानपूर्ण जीवन के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

## भारतीय संविधान के निर्माण में योगदान–

डॉ. आंबेडकर का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान भारतीय संविधान के निर्माण में उनकी केंद्रीय भूमिका है। वे संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। उनके नेतृत्व और विधिक ज्ञान ने संविधान के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय संविधान समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है। संविधान के अनुच्छेद 14 से 18 तक समानता के अधिकार तथा अस्पृश्यता के उन्मूलन जैसे प्रावधान सामाजिक न्याय की दिशा में ऐतिहासिक कदम हैं। डॉ. आंबेडकर का विश्वास था कि राजनीतिक लोकतंत्र तभी सफल होगा, जब समाज में भी समानता और बंधुत्व की भावना विकसित होगी।

## शिक्षा और सामाजिक न्याय का संदेश–

डॉ. आंबेडकर शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम मानते थे। उनका विचार था कि ज्ञान के बिना व्यक्ति अपने अधिकारों को समझने और अन्याय का विरोध करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। उन्होंने महिलाओं, श्रमिकों और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए भी महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। आज जब समाज शिक्षा, रोजगार, लैंगिक समानता और सामाजिक भेदभाव जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब उनके विचार और अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं। उनके संदेश का अर्थ केवल शिक्षा प्राप्त करना नहीं, बल्कि ज्ञान के आधार पर विवेकपूर्ण निर्णय लेना, संगठित होकर सकारात्मक परिवर्तन लाना और संवैधानिक तरीकों से अपने अधिकारों की रक्षा करना भी है।

## आज के समय में प्रासंगिकता–

डॉ. आंबेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि केवल उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करने या उनके चित्र पर माल्यार्पण करने से नहीं दी जा सकती। उनकी शिक्षाओं को अपने व्यवहार और सामाजिक जीवन में अपनाना अधिक आवश्यक है। जाति, धर्म, भाषा, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव न करना, प्रत्येक नागरिक की गरिमा का सम्मान करना और शिक्षा के अवसरों को सबके लिए सुलभ बनाना उनके विचारों को जीवंत रखने के व्यावहारिक उपाय हैं। 6 दिसंबर का दिन हमें याद दिलाता है कि डॉ. भीमराव आंबेडकर का जीवन संघर्ष, ज्ञान, आत्मसम्मान और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक गाथा है। उन्होंने ऐसा भारत बनाने का सपना देखा, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। डॉ. आंबेडकर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम संविधान के मूल्यों को समझें, अपने कर्तव्यों का पालन करें और ऐसा समाज बनाने के लिए प्रयासरत रहें, जहाँ किसी व्यक्ति की पहचान उसकी जाति या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसकी मानवीय गरिमा और क्षमताओं से हो।

# भ्रष्टाचार और नरसंहार– सभ्य समाज के सामने दो गंभीर चुनौतियाँ

**'जब व्यवस्था में ईमानदारी कमजोर पड़ती है और समाज में नफरत को बढ़ावा मिलता है, तब सबसे अधिक नुकसान आम इंसान के अधिकारों, सम्मान और जीवन को होता है।'**

9 दिसंबर का दिन विश्व समुदाय को दो गंभीर चुनौतियों पर विचार करने का अवसर देता है। इस दिन अंतर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस तथा नरसंहार के पीड़ितों की स्मृति एवं गरिमा और इस अपराध की रोकथाम का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता के लिए 9 दिसंबर निर्धारित किया जबकि नरसंहार के पीड़ितों के सम्मान और भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के उद्देश्य से भी इसी दिन को अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में स्थापित किया।

पहली दृष्टि में भ्रष्टाचार और नरसंहार अलग-अलग विषय दिखाई देते हैं। एक आर्थिक एवं प्रशासनिक अनियमितताओं से जुड़ा है, तो दूसरा मानवता के विरुद्ध किए जाने वाले सबसे गंभीर अपराधों में से एक है। लेकिन दोनों के केंद्र में एक साझा प्रश्न है- क्या हमारा समाज प्रत्येक मनुष्य के जीवन, अधिकार और गरिमा की रक्षा करने में सफल हो रहा है?

## भ्रष्टाचार: जब अधिकार सुविधा बन जाते हैं–

भ्रष्टाचार केवल रिश्वत लेने या सरकारी धन के दुरुपयोग तक सीमित नहीं है। यह उस व्यवस्था में भी दिखाई देता है, जहाँ किसी व्यक्ति का वैध काम उसकी योग्यता या अधिकार के बजाय उसकी आर्थिक क्षमता, पहचान अथवा प्रभाव के आधार पर होने लगे। जब गरीब व्यक्ति को आवश्यक प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए अनावश्यक चक्कर लगाने पड़ें, किसी जरूरतमंद को सरकारी सहायता के लिए अनुचित भुगतान करना पड़े या सार्वजनिक धन का उपयोग जनहित के बजाय निजी लाभ के लिए हो, तब भ्रष्टाचार का वास्तविक सामाजिक प्रभाव सामने आता है। इसका सबसे अधिक बोझ अक्सर उन लोगों पर पड़ता है, जिनके पास संसाधन और प्रभाव सीमित हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रोजगार के लिए निर्धारित संसाधनों का दुरुपयोग समाज की असमानता को बढ़ा सकता है। संयुक्त राष्ट्र भी भ्रष्टाचार को लोकतांत्रिक संस्थाओं, कानून के शासन और आर्थिक विकास के लिए गंभीर चुनौती मानता है।

विडंबना यह है कि भ्रष्टाचार पर भाषण देना आसान है, लेकिन अपने छोटे-छोटे व्यवहारों में ईमानदारी बनाए रखना कई बार कठिन लगता है। हम सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता की अपेक्षा करते हैं, लेकिन निजी सुविधा के लिए नियमों को दरकिनार करने को उचित ठहराने लगते हैं। इसलिए भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई केवल सरकार या जाँच एजेंसियों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि नागरिक चरित्र की भी परीक्षा है।

## नरसंहार: मानवता की सबसे भयावह विफलता–

नरसंहार किसी समुदाय को उसकी राष्ट्रीयता, जातीयता, नस्ल या धर्म के आधार पर पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से नष्ट करने के विशिष्ट इरादे से किए जाने वाले उन कृत्यों को कहा जाता है, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानून में परिभाषित किया गया है। यह केवल बड़ी संख्या में लोगों की हत्या का नाम नहीं है; इसकी कानूनी परिभाषा में अन्य गंभीर कृत्य भी शामिल हैं।

इतिहास गवाह है कि जब किसी समुदाय को लगातार दूसरे दर्जे का नागरिक बताया जाता है, उसके विरुद्ध घृणा फैलाई जाती है और उसकी मानवीय पहचान को नकारा जाता है, तब हिंसा के लिए खतरनाक वातावरण बन सकता है। प्रचारए झूठी सूचनाएँ, भेदभाव और अमानवीय भाषा लोगों के बीच अविश्वास को गहरा कर सकती हैं। रवांडा में 1994 का तुत्सी नरसंहार और बोस्निया के स्रेब्रेनित्सा में 1995 की त्रासदी मानव इतिहास के ऐसे दर्दनाक अध्याय हैं, जो बताते हैं कि नफरत और सामूहिक हिंसा के परिणाम कितने विनाशकारी हो सकते हैं। इन घटनाओं को याद करना केवल अतीत के पीड़ितों को श्रद्धांजलि देना नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करना भी है।

## वर्तमान विश्व के लिए चेतावनी–

आज दुनिया के अनेक हिस्सों में सशस्त्र संघर्ष, विस्थापन, सामुदायिक तनाव और मानवीय संकट गंभीर चिंता के विषय हैं। ऐसी परिस्थितियों में नागरिकों की सुरक्षा, मानवीय

सहायता की उपलब्धता और अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने सूचना का प्रसार तेज किया है, लेकिन इनके माध्यम से नफरत फैलाने वाली सामग्री और भ्रामक सूचनाएँ भी तेजी से फैल सकती हैं। किसी समुदाय के विरुद्ध अपुष्ट आरोपों को बार-बार दोहराना या पूरी आबादी को किसी व्यक्ति के अपराध के लिए जिम्मेदार ठहराना सामाजिक तनाव को बढ़ा सकता है। यह भी आवश्यक है कि नरसंहार जैसे गंभीर कानूनी शब्दों का प्रयोग तथ्यों और अंतर्राष्ट्रीय कानून की कसौटी पर किया जाए। प्रत्येक युद्ध अपराध या सामूहिक हिंसा अपने आप में नरसंहार नहीं होता; इसके लिए विशिष्ट कानूनी तत्वों की जाँच आवश्यक है। साथ ही, किसी अपराध की अंतिम कानूनी पुष्टि की प्रतीक्षा करते हुए भी नागरिकों की सुरक्षा और संभावित अत्याचारों की रोकथाम के लिए कदम उठाना जरूरी है। संयुक्त राष्ट्र ने भी चेतावनी दी है कि हिंसक संघर्ष, जवाबदेही का अभाव और डिजिटल माध्यमों से फैलने वाली नफरत एवं गलत सूचनाएँ नरसंहार के जोखिम को बढ़ा सकती हैं।

**समाधानः जवाबदेही, संवेदनशीलता और न्याय—**

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए प्रशासनिक प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, सार्वजनिक धन का नियमित लेखा-परीक्षण, स्वतंत्र जाँच, प्रभावी शिकायत निवारण और सूचना तक नागरिकों की पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है। शिकायत करने वाले व्यक्तियों की सुरक्षा तथा कानून का निष्पक्ष क्रियान्वयन भी महत्त्वपूर्ण हैं। नरसंहार की रोकथाम के लिए घृणास्पद भाषण और भेदभाव के शुरुआती संकेतों को गंभीरता से लेना, शांति एवं मानवाधिकारों की शिक्षा देना, अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा करना और अपराधियों को जवाबदेह ठहराना आवश्यक है। सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को चेतावनी के संकेतों पर समय रहते कार्रवाई करनी चाहिए। नागरिकों की भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। हमें रिश्वत देने या लेने से बचना चाहिए, गलत सूचना साझा करने से पहले उसकी पुष्टि करनी चाहिए और किसी भी समुदाय के प्रति नफरत फैलाने वाली भाषा का विरोध करना चाहिए। अन्याय को देखकर चुप रहना कई बार उसे मजबूत करने का कारण बन सकता है।

9 दिसंबर हमें याद दिलाता है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल उसकी अर्थव्यवस्था, सैन्य क्षमता या तकनीकी प्रगति में नहीं होती। उसकी असली पहचान इस बात से बनती है कि वहाँ कानून कितना निष्पक्ष है, सार्वजनिक व्यवस्था कितनी जवाबदेह है और प्रत्येक मनुष्य की गरिमा कितनी सुरक्षित है। भ्रष्टाचार समाज के संसाधनों और संस्थाओं को कमजोर करता है, जबकि नरसंहार मानव जीवन और सामूहिक अस्तित्व पर विनाशकारी आघात करता है। दोनों के विरुद्ध संघर्ष के लिए न्यायपूर्ण व्यवस्था, जागरूक नागरिक और मानवीय मूल्यों के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता आवश्यक है। सच्ची श्रद्धांजलि केवल पीड़ितों को याद करने में नहीं, बल्कि ऐसी परिस्थितियों को रोकने में है, जिनमें किसी व्यक्ति का अधिकार धन के सामने और किसी मनुष्य का जीवन नफरत के सामने छोटा पड़ जाए। ईमानदारी, न्याय और मानव गरिमा को जीवन का आधार बनाकर ही हम एक सुरक्षित, संवेदनशील और शांतिपूर्ण विश्व की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।



# दीपावली: अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का महापर्व

भारत पर्वों और त्योहारों की भूमि है। यहां प्रत्येक त्योहार अपने भीतर कोई न कोई संदेश, परंपरा और जीवन-दर्शन समेटे हुए है। इन्हीं त्योहारों में दीपावली का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। दीपावली केवल दीप जलाने, मिठाइयां बांटने और आतिशबाजी करने का पर्व नहीं, बल्कि यह जीवन में आशाए उल्लास, सद्भाव और सकारात्मकता का प्रकाश फैलाने का अवसर है। कार्तिक अमावस्या की अंधेरी रात में असंख्य दीपों का जगमगाना इस बात का प्रतीक है कि प्रकाश की एक छोटी-सी किरण भी गहन अंधकार को चुनौती दे सकती है।

दीपावली का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर तथा रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर पूरी नगरी को प्रकाशमय कर दिया था। तभी से दीपावली को असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म और अन्याय पर न्याय की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। जैन धर्म में यह भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में भी महत्वपूर्ण है। वहीं सिख परंपरा में यह बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दीपावली का संबंध स्वच्छता, समृद्धि और आर्थिक गतिविधियों से भी है। लोग अपने घरों, दुकानों और प्रतिष्ठानों की साफ-सफाई करते हैं, रंग-रोगन करवाते हैं और नए संकल्पों के साथ जीवन की शुरुआत करते हैं। माता लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा कर सुख-समृद्धि, विवेक और मंगलमय जीवन की कामना की जाती है। व्यापारी वर्ग के लिए यह पर्व नए बही.खाते आरंभ करने और आर्थिक वर्ष की नई योजनाएं बनाने का अवसर भी है।




लेकिन बदलते समय के साथ दीपावली मनाने के तौर-तरीकों में भी परिवर्तन आया है। आधुनिकता और दिखावे की होड़ ने कहीं-कहीं इस पर्व की मूल भावना को पीछे छोड़ दिया है। महंगे उपहार, अनावश्यक खरीदारी, अत्यधिक आतिशबाजी और प्रतिस्पर्धा ने त्योहार के स्वरूप को प्रभावित किया है। पटाखों से होने वाला वायु एवं ध्वनि प्रदूषण न केवल पर्यावरण, बल्कि बच्चों, बुजुर्गों बीमार व्यक्तियों और पशु.पक्षियों के लिए भी परेशानी का कारण बनता है।

आज आवश्यकता है कि हम दीपावली को केवल बाहरी सजावट तक सीमित न रखें, बल्कि इसके वास्तविक संदेश को अपने जीवन में उतारें। मिट्टी के दीपक जलाकर स्थानीय कुम्हारों को प्रोत्साहित करें, जरूरतमंद परिवारों के साथ खुशियां बांटें, स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता दें और पर्यावरण के अनुकूल दीपावली मनाएं। किसी निराश व्यक्ति के जीवन में उम्मीद जगानाए किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाना और आपसी मतभेद भुलाकर संबंधों में मधुरता लाना भी दीपावली का ही सच्चा उत्सव है। वास्तव में दीपावली हमें अपने भीतर के अज्ञान, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष और नकारात्मकता को समाप्त करने की प्रेरणा देती है। यदि हमारे मन में करुणा, विचारों में पवित्रता और व्यवहार में मानवता का दीप जलता है, तभी दीपावली का उद्देश्य सार्थक होगा।

आइए, इस दीपावली संकल्प लें कि हम केवल अपने घरों को ही नहीं, बल्कि समाज और देश को भी प्रेम, सद्भाव, ज्ञान और सेवा के प्रकाश से आलोकित करेंगे। क्योंकि सच्ची दीपावली वही है, जहां हर चेहरे पर मुस्कान हो और हर जीवन में आशा का एक दीप जल रहा हो।

NMF | NGO

॥ सेवा ही धर्म है धर्म ही सेवा है ॥

Navdhriti Manavadhikar Foundation

# नवधृति मानवाधिकार फ़ाउंडेशन

की ओर से समस्त देशवासियों, सहयोगियों,
सदस्यों, स्वयंसेवकों, दानदाताओं एवं शुभचिंतकों को

# दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाश, ज्ञान, सद्भाव, समृद्धि और मानवता का यह पावन पर्व
आपके जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य, सफलता और
निरंतर प्रगति लाए, यही हमारी मंगलकामना है!

## दीपावली का संदेश

आइए, इस दीपावली पर हम केवल अपने घर ही नहीं,
बल्कि समाज के वंचित, जरूरतमंद एवं
हर वर्ग के लोगों के जीवन में भी
खुशियों का दीप जलाएं और
मानवता, सेवा, समानता तथा
अधिकारों के प्रति जागरूकता का
प्रकाश और मजबूत करें!

## हमारा संकल्प

- मानवाधिकार संरक्षण
- सामाजिक सशक्तिकरण
- शिक्षा सहयोग
- स्वास्थ्य सेवा
- पर्यावरण संरक्षण
- जनकल्याण अभियान

*मानवता, सेवा और सामाजिक न्याय के संकल्प के साथ*
*आप सभी को दीपावली की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं!*

NMFNGO.org | मुख्य कार्यालय : जयपुर, राजस्थान

# NMS NEWS

सच. साहस. न्याय की खबर

**Navdhriti Manavadhikar Samachar**

DIGITAL & PRINT MEDIA

## समस्त पाठकों, संवाददाताओं, सहयोगियों व शुभचिंतकों को

# दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाश, ज्ञान, सद्भाव और समृद्धि के पावन पर्व दीपावली पर हम आप सभी के जीवन में सुख, शांति, स्वास्थ्य, समृद्धि और निरंतर प्रगति की मंगलकामना करते हैं।





## दीपावली का संदेश

आइए, इस दीपावली पर केवल अपने घर ही नहीं, बल्कि समाज में भी खुशियों का प्रकाश फैलाएं। जरूरतमंदों की सहायता करें, सद्भावना, भाईचारा और मानवता के मूल्यों को और मजबूत बनाएं।

- ताजा समाचार
- विशेष रिपोर्ट
- मानवाधिकार के मुद्दे
- विकास समाचार
- राजस्थान अपडेट
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समाचार

*आप सभी को दीपों के इस महापर्व की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं!*

NMS.NEWS | मुख्य कार्यालय : जयपुर, राजस्थान | रिपोर्टर बनने व समाचार देने के लिए सम्पर्क 9251120059

# BHUMI MARKETING

Digital Ideas, Powerful Solutions

आज ही अपने व्यापार को बनाएं डिजिटल

# Bhumi Marketing

YOUR GROWTH, OUR MISSION

9887700059
www.bhumi.marketing
Support@bhumi.marketing

Whatsapp
Google Map
SMS
Facebook
Instagram
Website
E-mail

अब समय है
अपने बिजनेस को
ऑनलाइन पहचान, अधिक ग्राहक
और अधिक बिक्री देने का।

## BHUMI MARKETING – आपकी डिजिटल सफलता का पूरा समाधान

01 **WEBSITE DEVELOPMENT**
- Custom Website Design
- Responsive Design
- User Friendly
- SEO Friendly

02 **SEO SERVICES**
- On-Page SEO
- Off-Page SEO
- Technical SEO
- Keyword Research

03 **SOCIAL MEDIA MARKETING**
- Page Management
- Content Creation
- Audience Engagement
- Brand Awareness

04 **GOOGLE ADS**
- Search Ads
- Display Ads
- Shopping Ads
- Lead Generation

05 **META ADS**
- Facebook Ads
- Instagram Ads
- Audience Targeting
- Retargeting Ads

06 **CRM & IVR SERVICES**
- Customer Management
- Lead Management
- IVR Setup & Management
- Business Automation

07 **WHATSAPP API & AUTOMATION**
- WhatsApp API Integration
- Auto Reply / Chatbot
- Bulk Messaging
- Smart Automation

08 **BULK SMS RCS**
- Transactional SMS
- Promotional SMS
- RCS Messaging
- Bulk SMS Campaign

## OUR CORE SERVICES

1. **Digital Marketing** – ब्रांड को बढ़ाएं, ग्राहक बढ़ाएं, बिक्री बढ़ाएं।
2. **Website Development** – प्रोफेशनल वेबसाइट जो आपके बिजनेस को नई पहचान दे।
3. **WhatsApp Marketing** – सीधे ग्राहक से जुड़ें, तेजी से अपने संदेश पहुँचाएं।
4. **C.R.M.** (Customer Relationship Management) – ग्राहक संबंधों को मजबूत करें, बिजनेस बढ़ाएं।
5. **I.V.R.** (Interactive Voice Response) – प्रोफेशनल कॉल हैंडलिंग, बेहतर ग्राहक अनुभव।
6. **Whatsapp API & Automation** – ऑटोमेशन से समय बचाएं, बढ़ाएं प्रोडक्टिविटी।
7. **Bulk SMS RCS** (Transactional & Promotional) – एक साथ हजारों ग्राहकों तक अपनी बात पहुँचाएं।

## Why Bhumi Marketing?

- WhatsApp & WhatsApp API
- Google Business & Google Maps
- SMS & Email Marketing
- Facebook & Instagram Ads
- Website + CRM + IVR Integration

### कम बजट में बेहतरीन परिणाम

- छोटे व्यापार से लेकर बड़ी कंपनी तक समाधान
- लीड से लेकर सेल तक पूरा सिस्टम
- हर बिजनेस के लिए अलग डिजिटल रणनीति

## आज ही अपने बिजनेस को डिजिटल बनाएं !

वेबसाइट | डिजिटल मार्केटिंग | व्हाट्सअप ऑटोमेशन | CRM, IVR | लीड सिस्टम

आज ही
Free Consultation
हेतू कॉल करें-
9887700059

9887700059
www.bhumi.marketing
Support@bhumi.marketing

छोटे कदम .... बड़े सपनों की ओर .... SINCE 1999

# JAI JASOL
DEVELOPERS

SINCE 1999

## पचपदरा रिफाइनरी
के आसपास में





**बड़ी ज़मीन व प्लॉट लेने के लिए**

वह तरह के जमीन के कंसल्टेंट्स के लिए संपर्क करें

**बड़ी जमीन उपलब्ध**
औद्योगिक, कमर्शियल एवं निवेश के लिए उपयुक्त भूमि उपलब्ध।

**निवेश के लिए बेहतरीन लोकेशन**
रिफाइनरी के पास - भविष्य के लिए सुनहरा अवसर।

**उचित मार्गदर्शन एवं पारदर्शी डील**
अनुभवी कंसल्टेंट्स द्वारा सुरक्षित और पारदर्शी व्यवहार।

**खरीद एवं बिक्री दोनों की सुविधा**
खरीदने और बेचने - दोनों के लिए संपूर्ण सहायता।

★ उद्योग का विस्तार ★
आपका निवेश
सही जगह, सही समय पर!

प्राइम लोकेशन | सुरक्षित निवेश | ₹ उचित मूल्य | समय पर डील

संपर्क करें | 95499 95777

www.jaijasold.org.in | info@jaijasold.org.in

सामान्य ज्ञान—

# राजस्थान संक्षिप्त परिचय

251. भारत का दूसरा सबसे बड़ा खनिज उत्पादक राज्य कौन-सा है?

उत्तर- राजस्थान

252. राजस्थान का प्राचीन संगठित उद्योग कौन-सा है?

उत्तर- सूती वस्त्र उद्योग

253. राजस्थान के अभ्रक उत्पादक जिले कौन-से है?

उत्तर- अजमेर, भीलवाड़ा व उदयपुर

254. राजस्थान में जावर क्षेत्र किस खनिज के लिए जाना जाता है?

उत्तर- जिंक

255. राजस्थान में मकराना किसके के लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर- संगमरमर के लिए

256. संगमरमर उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का प्रथम जिला कौनसा है?

उत्तर- राजसंमद

257. राजस्थान में जावर क्षेत्र किस खनिज हेतु प्रसिद्ध है?

उत्तर- जिंक

258. भारत में ताँबे के उत्पादन में राजस्थान की हिस्सेदारी कितनी है?

उत्तर- 33 प्रतिशत

259. राजस्थान का शहर जो सफेद सीमेंट हेतु प्रसिद्ध है?

उत्तर- गोटन (नागौर)

260. राजस्थान के जिले में अभ्रक मिश्रित हैमेटाईट लोह अयस्क पाया जाता है?

उत्तर- भीलवाड़ा में

261. राजस्थान का जिला 95 प्रतिशत से अधिक फेल्सपार का उत्पादन करता है ?

उत्तर- अजमेर

262. राजस्थान के कौनसे जिलों से बेटोनाइट के महत्वपूर्ण भण्डार मिले हैं?

उत्तर- बाड़मेर, बीकानेर व सवाई माधोपुर

263. राजस्थान के भिवाड़ी जिले में स्थित कहरानी किसलिए सुर्खियों में हैं?

उत्तर- सेंट गोवेन ग्लास फैक्ट्री इकाई की स्थापना के कारण

264. राजस्थान में कहां गिरल लिग्नाइट खानें हैं?

उततर- पश्चिमी भाग बाड़मेर में

265. किस राज्य को भारत का दूसरा सबसे बड़ा खनिज भण्डार कहा जाता है?

उत्तर- राजस्थान को

266. राजस्थान राज्य के तीन जिलों में बड़े पैमाने पर लिग्नाईट निक्षेप है, नागौर व बाड़मेर के अलावा तीसरा जिला कौनसा हैं?

उत्तर- बीकानेर

267. वर्तमान हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड का पूर्ववर्ती नाम क्या था?

उत्तर- मेटल कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया

268. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड का मुख्यालय है?

उत्तर- उदयपुर में

269. जावर खनन क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध हैं?

उत्तर- सीसा व जस्ता के लिए

270. सार्वजनिक क्षेत्र में नमक बनाने का कार्य कहां किया जाता है?

उत्तर- डीडवाना व सांभर

271. माण्डो की पाल क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर- फलोराइड उत्पादन के लिए

272. देश में घीया पत्थर के उत्पादन में राजस्थान का कौनसा स्थान है?

उत्तर- प्रथम

273. करौली जिला किसके उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है?

उत्तर- लाल पत्थर

274. सवाई माधोपुर में चौथ का बरवाड़ा किस खनिज के लिए जाना जाता है?
उत्तर- सीसा व जस्ता की खान के लिए
275. राजस्थान से चूना एवं चूना पत्थर आयात करने वाला राज्य कौन-सा है ?
उत्तर- गुजरात एवं महाराष्ट्र
276. राजस्थान में सीसे की सबसे बड़ी खान कहाँ है?
उत्तर- जावर (उदयपुर)
277. सीसा-जस्ता के मिश्रित रूप में मिलने वाले अयस्क को क्या कहते है?
उत्तर- गेलेना
278. सीकर में सर्वाधिक पाया जाने वाला खनिज है?
उत्तर- कैल्साइट
279. संगमरमर की सबसे बड़ी मंडी कहाँ स्थित है?
उत्तर- किशनगढ़ में
280. हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड की स्थापना कहाँ व किसकी सहायता से की गई?
उत्तर- खेतड़ी (झुंझुनू) में अमेरिका की सहायता से
281. चाँदी खनिज हेतु जानी जाने वाली खान कौन-सी है?
उत्तर- जावर की खान
282. चाँदी के उत्पादन में राजस्थान का देश में कौन-सा स्थान है?
उत्तर- प्रथम
283. चाँदी के उत्पादन क्षेत्र कौन-कौन से हैं?
उत्तर- जावर, देबारी, माचिया मगरा (उदयपुर), रामपुरा, अगुचा (भीलवाड़ा)
284. भीलवाड़ा जिला के अगूचा-गुलाबपुरा क्षेत्र में कौन-सा खनिज पाया जाता है?
उत्तर- अभ्रक
285. राजस्थान का जिप्सम उत्पादक क्षेत्र कौन-से है?
उत्तर- नागौर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर व गंगानगर
286. राजस्थान के किस जिले में टंगस्टन पाया जाता है?
उत्तर- नागौर
287. देश की एक मात्र टंगस्टन की कहाँ स्थित है?
उत्तर- डेगाना-भाकरी (नागौर)
288. राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम द्वारा खनन कार्य कहाँ किया जा रहा है?
उत्तर- वाल्दा गाँव (सिरोही)
289. राज्य में टंगस्टन किस अयस्क से प्राप्त होता है?
उत्तर- वुल्फ्रेमाइट
290. स्टील ग्रेड चूना पत्थर हेतु कौनसा जिला प्रसिद्ध है?
उत्तर- जैसलमेर
291. राज्य में चूना पत्थर का उत्पादन कहाँ होता है?
उत्तर- चित्तौड़गढ़
292. चूना पत्थर के तीन प्रकार कौन-कौनसे है?
उत्तर- सीमेंट ग्रेड, केमिकल ग्रेड व स्टील ग्रेड
293. सीमेंट ग्रेड चूना किन जिलों में पाया जाता है?
उत्तर- चित्तौड़, बूंदी व जालौर
294. केमिकल ग्रेड चूना सर्वाधिक कहाँ पाया जाता है?
उत्तर- जोधपुर व नागौर
295. राजस्थान में खनिज तेल का सबसे अधिक उत्पादन करने वाले तेल क्षेत्र का नाम क्या है?
उत्तर- मंगला (बाड़मेर)
296. जैसलमेर में तेल भण्डार के क्षेत्र कौन-से है?
उत्तर- साधेवाला व तनोट
297. गुढ़ामलानी, कोसल, बायतु व सिणधरी तेल क्षेत्र किस जिले में है?
उत्तर- बाड़मेर
298.मंगला, भाग्यम, राजेश्वरी, विजया, ऐश्वर्या, गूढ़ा व कामेश्वरी किनके नाम है?
उत्तर- तेल कुओं के नाम
299. जस्ता अयस्क की खाने किस जिले में है?
उत्तर- उदयपुर
300. वर्तमान में किन तेल कुओं से केयर्न इण्डिया लिमिटेड द्वारा तेल का दोहन किया जाता रहा है?
उत्तर- मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या क्रमशः

छोटे कदम बड़े सपनों की ओर | Since 1999

# JAI JASOL

## BUILDING MATERIAL

आप सभी ग्राहकों, सहयोगियों, शुभचिंतकों
एवं समस्त क्षेत्रवासियों को

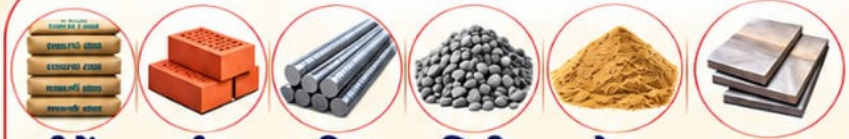
# दीपावली की

## हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रकाश, समृद्धि, स्वास्थ्य, सुख-शति और
उन्नति के इस पावन पर्व दीपावली पर
हम आपके जीवन में निरंतर सफलता,
खुशहाली और नए अवसरों की
मंगलकामना करते हैं।




## हमारी प्रमुख सामग्री



सीमेंट | ईट | सरिया | गिट्टी | रेत | टाइल्स




डबल एसी
( AAC ) ब्लॉक

- उच्च गुणवत्ता की सामग्री
- समय पर आपूर्ति
- विश्वसनीय सेवा

**JAI JASOL**
BUILDING MATERIAL

मुख्य कार्यालय : बालोतरा, राजस्थान
9887700059

# NMF NGO

॥ सेवा ही धर्म है धर्म ही सेवा है ॥

Navdhriti Manavadhikar Foundation





































*If not delivered please return to-*

***From,***

**NMS NEWS**
**Ganesh Vihar Colony Sirsi Mod**
**Makan Number 252**
**Jaipur 302012**
**Mobile — 9251120059**

**To,**

**नाम** _____

**पता** _____

_____